कथा सरिता

कार्य की महत्ता

किसी गांव में एक सेठ रहता था। वह प्रतिदिन मंदिर जाता, देव प्रतिमा की अर्चना-उपासना करता, वहां घी का एक दीपक जलाता और घर आ जाता। यह क्रम पूरा होने के बाद ही उसकी दिनचर्या शुरू होती। वह शाम तक अपने व्यवसाय में लगा रहता। उसी गांव में एक निर्धन व्यक्ति भी था। ईश्वर, धर्म और पूजा-पाठ में उसकी पूरी आस्था थी लेकिन वह मंदिर में जाकर दीप जलाने के नियम का पालन नहीं कर पाता था, क्योंकि मंदिर में घी के अलावा कोई और दीप जलाने का चलन ही नहीं था। इसलिए वह सरसों के तेल का एक दीपक जलाकर नित्य अपनी गली में रख देता था। वह अंधेरी गली थी और शाम होने के बाद कई लोग वहां से आते-जाते थे। उन्हें दीपक की रोशनी में सड़क पर चलने में काफी सुविधा होती थी। रात का पहला पहर बीत जाने के बाद जब दीपक बुझ जाता तो उस गली में लोगों का आना-जाना भी बंद हो जाता। यह सिलसिला सालों तक चलता रहा। न तो मंदिर में दीपक जलाने वाले सेठ का नियम टूटा और न ही गली में तेल का दीपक जलाने वाले निर्धन व्यक्ति का। दोनों वृद्ध हो गए और उनकी मृत्यु हो गई। जब वे यमलोक पहुंचे तो सेठ को निम्न स्तर की स्थिति और सुविधाएं दी गई, जबकि निर्धन व्यक्ति को उच्च श्रेणी की सुविधाएं।

यह व्यवस्था देख सेठ ने यमराज से पूछा, यह भेद क्यों, जबकि मैं भगवान के मंदिर में घी का एक दीपक जलाता था, वह भी असली घी का।

धर्मराज मुस्कराए और बोले, पुण्य की महत्ता मूल्यों के आधार पर नहीं, कार्य की उपयोगिता और भावना पर होती है। मंदिर तो पहले से ही प्रकाशमान था। लेकिन उस गरीब व्यक्ति ने ऐसे स्थान पर प्रकाश फैलाया, जिससे हजारों व्यक्तियों को लाभ मिला।

धर्म का असली उद्देश्य तो आम आदमी का उत्थान है। अगर धर्म-कर्म का सामान्य व्यक्ति को लाभ न मिले तो इसका अर्थ ही क्या है। इसलिए इस निर्धन व्यक्ति का प्रयास ज्यादा महत्वपूर्ण है।

चापलूसी

एक बूढ़ा आदमी अपने पड़ोसियों के साथ बातचीत कर रहा था। बात करते-करते उसने कहा कि हमने अपने जीवन में बहुत कुछ किया, परन्तु किसी भी परिस्थिति में अपने धर्म को नहीं छोड़ा। अपने जीवन में बहुत-कुछ खाया-पिया मौज उड़ाई परन्तु जहां कहीं भी हम गए हमने धर्म को पूरी तरह निभाया। इस पर पड़ोसियों ने कहा जरा अपनी बात को स्पष्ट करिये। बूढ़ा बोला, देखो किसी ने हमको बहुत तंग किया तो हमने उस पर क्रोध बेशक किया और जीवन में शराब भी कई बार पी, परन्तु रोज उठकर रामधुन जरूर गयी। अगर

एकनाथ के पास एक सेठ आए, बोले - आपका जीवन कितना शांति भरा है। कोई उपाय बताएं, ताकि कभी भी हमें अशांति न प्राप्त हो। सदैव आनंद ही आनंद हो। एकनाथ बोले - पहले तो तू अपने आठ दिनों की चिंता कर। तू इतने दिन का ही मेहमान है। इस अवधि में अच्छा जीवन जी ले। उदास मन से वह लौटा तो, पर आते ही वह बदल सा गया। अपने बुरे व्यवहार के लिए पहले पत्नी से, फिर बच्चों से, फिर मित्रों से क्षमा मांगी। अपने

केशव एक जमींदार के खेतों में काम करता था। उसे लगता था कि जमींदार को चापलूसी बहुत पसंद है। शायद इसलिए अन्य मजदूर उसके चारों ओर जमघट लगाये जमींदार की चापलूसी करते रहते हैं। केशव कठिन मेहनत करता था लेकिन उसे लगता था कि जमींदार उसकी ओर ध्यान नहीं देता है। केशव ने एक दिन सोचा, कैसे भी हो, मालिक को खुश करना होगा। उसे पता था कि मालिक को खीर बहुत पसंद है। एक दिन उसने अपनी पत्नी को सारी बात बताई। पत्नी बोली कि ऐसा कीजिए, मैं खीर बनाकर देती हूँ। आप मालिक को जाकर खिलाएं। सब ठीक हो जायेगा। पत्नी ने खीर बनायी और केशव उसे लेकर भागता-भागता जमींदार के पास पहुंचा। मालिक-मालिक मैं आपके लिए खीर लाया हूँ। आपको बहुत पसंद है ना! केशव का चिल्लाना सुनकर सभी उसकी ओर देखने लगे। जमींदार को तो बहुत गुस्सा आया। और उसने सोचा कि उसका सबसे मेहनती मजदूर भी चापलूसी पर उतर आया है। मालिक ने केशव के कान पकड़कर खींचे। मूर्ख, मैं तुमको सबसे अच्छा और मेहनती समझता हूँ और तुम मुझे खीर खिलाकर चापलूसी करना चाहते हो, ठीक से अपना काम करना ही मालिक की सबसे बड़ी सेवा है। मैं तुम्हारी मेहनत का सम्मान करता हूँ और तुमसे वैसे भी बहुत खुश हूँ। आगे से तुम किसी तरह की झूठी बातों में मत पड़ना।

केशव की समझ में आ गया कि कोई भी समझदार व्यक्ति चापलूसी पसंद नहीं करता है। सच्ची तारीफ ही करनी चाहिए न कि झूठी चापलूसी।

अहंकार भी काम का

महाराणा प्रताप ने जंगलों में अपार कष्टों को झेलते हुए एक बार कमजोरी का अनुभव किया। वन में बच्चों के लिए बनाई गई घास की रोटी भी जब कोई जानवर उठा ले गया तो मानसिक रूप से वे टूट गए। उस समय उन्होंने स्वयं को बहुत दयनीय स्थिति में पाकर अकबर से संधि कर लेनी चाही। उनके एक भक्त-चारण को इस बात का पता चला तो उसने महाराणा को एक दोहा लिखकर भेजा। उसमें लिखा था कि इस धरती पर हिन्दू कुलरक्षक एक आप ही थे, जो मुगल-बादशाह से लोहा लेते रहे। किसी भी स्थिति में शक्ति को फिर से संगठित कर मेवाड़ के शेष भाग को अकबर के अधिकार से मुक्त कराने के प्रयत्न में जुट गए। चारण को धन्यवाद देते हुए लिखकर भेजा कि सूरज जिस दिशा में उगता है, उसी दिशा में उगेगा, तुम चिंता मत करो। अहंकार को जगाना कभी-कभी व्यावहारिक जगत में बड़े काम का होता है। लोग किसी प्रसंग में कह देते हैं, इतने बड़े होकर जब आप ही ऐसा काम करेंगे तो किसी अन्य से क्या आशा की जाए? इस बात से आदमी संभल जाता है और कभी अवांछित कार्य नहीं करता।

आश्चर्यचकित करता है, जैसे सूर्य को पूरब की बजाय पश्चिम में उगते देखने पर होता है। कहते हैं कि उस एक दोहे को पढ़कर महाराणा का स्वाभिमान पुन: जागृत हो गया। संधिपत्र को फाड़कर फेंक दिया और अपनी

धर्म नहीं छोड़ा

कभी उसके लिए समय नहीं मिला तो हमने अपने मन में राम को सामने लाकर माथा ही टेक दिया और मन-ही-मन उसको तिलक देकर अपने को भी तिलक दिया, तो इस प्रकार मैंने धर्म को नहीं छोड़ा। यह सुनकर उनमें जो समझदार आदमी थे वे हंस पड़े, क्योंकि वास्तव में तो तिलक देने को धर्म नहीं कहा जाता। धर्म कोई गंगा के किनारे जाकर माला फेरने व मंदिर में जाकर पूजा करने की ग्राहकों से भी वह मिलता रहा। सबसे विनम्र भाव से क्षमा मांगता और प्रभु से निरंतर प्रार्थना करता कि अंत कष्टमय न हो। नवें दिन वह

मृत्यु का भय

एकनाथ के पास पहुंचा और पूछा - हे नाथ! आठ दिन तो बीत गए, अब अंतिम घड़ी कब आए? एकनाथ बोले - पहले यह बता कि तेरे

वस्तु नहीं है, बल्कि धर्म तो धारण करने की वस्तु है। अगर किसी मनुष्य ने पवित्रता धारण नहीं की, अपने जीवन को दैवी गुणों से नहीं सजाया तो उसे धर्मात्मा नहीं कहा जा सकता। जिसके मन में विकार है वह चाहे सारा दिन पूजा क्यों न करता हो, उसे पापात्मा ही कहा जायेगा, धर्मात्मा नहीं। जहां पाप है वहां ताप अवश्य है, जहां भोग है वहां रोग व शोक भी जरूर होते हैं। जहां धर्म है वहां ही उपकार है। इसलिए कहते भी हैं ''राम राजा राम प्रजा, राम साहूकार है, जिये नगरी बसे दाता धर्म का उपकार है।''

ये आठ दिन कैसे बीते? वह बोला - प्रभु! मुझे मृत्यु के अलावा कुछ भी नहीं दीख रहा था। मुझे मेरे सारे दुष्कर्म याद आए। पश्चात्ताप ही करता रहा। एकनाथ बोले - तो याद रख! इसी तरह सारी जिंदगी जी। हम भी सारा जीवन इसी सोच के साथ जीते हैं। यह देह क्षणभंगुर है। यह याद रखकर परमात्मा का स्मरण करते हुए काम कर।

क्या हम भी यह संदेश याद रखकर जी सकते हैं?

देहरादून। उत्तराखण्ड के राज्यपाल अजीज कुरैशी को 'रक्षा-सूत्र' बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.मंजु बहन, ब्र.कु.माला बहन एवं ब्र.कु.सुशील।

दसुया, पंजाब। मुख्यमंत्री प्रकाश सिंह बादल को पवित्रता का प्रतीक 'रक्षा-सूत्र' बांधते हुए ब्र.कु.ज्ञानी बहन एवं ब्र.कु.सुमन बहन।

दिल्ली। साधना चैनल के एडिटर एन.के.सिंह को 'रक्षा-सूत्र' बांधते हुए ब्र.कु.अदिती बहन।

फतेहाबाद। हरियाणा के मुख्य संसदीय सचिव प्रह्लाद सिंह गिल्ला खेड़ा को 'रक्षा-सूत्र' बांधते हुए ब्र.कु.सीता बहन।

दिल्ली, चाणक्यपूरी। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सदस्यों को 'रक्षा-सूत्र' बांधने के पश्चात् समूह चित्र में हैं ब्र.कु.बुरूंदा बहन।

दिल्ली, महारौली। विधानसभा के अध्यक्ष डॉ.योगानंद शास्त्री को 'रक्षा-सूत्र' बांधते हुए ब्र.कु.अनीता बहन।